संस्कृत– साहित्य में पर्यावरण : एक दृष्टि

डॉ0 बृजेन्द्र पाण्डेय*

पर्यावरण दो शब्दों परि और आवरण से मिलकर बना है। परिपूर्वक और आङ्:पूर्वक (दोनों उपसर्ग) वृ धातु (वरण करना) से ल्युट् प्रत्यय (भाव में) होने पर पर्यावरण शब्द निष्पन्न होता है । उपसर्ग के कारण धातु का अर्थ बदल जाता है । परि का अर्थ है–चारों ओर, वही आवरण का अर्थ है–**आच्छादनीयानि** (ढँकने वाले) यहाँ पर्यावरण एक विशेष अर्थ मे रूढ़ है । यह शब्द प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध नहीं होता है ।

पर्यावरण शब्द अंग्रेजी Environment के शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जैसा कि पर्यावरण दो शब्दों परि+आवरण = पर्यावरण से बना है। परि का अर्थ अपने चारों ओर तथा आवरण का मतलब ढ़ँके हुए या ढ़ँकने के सन्दर्भ में इसका प्रयोग होता है। अर्थात् हमारे चतुर्दिक् जो कुछ भी है वह हमारा सम्पूर्ण पर्यावरण या परिस्थिति है। 'सम्पूर्ण पर्यावरण या पर्यावरण शब्द दोनों दो नहीं हैं बल्कि प्रायः बोल–चाल की भाषा में हम सम्पूर्ण पर्यावरण के स्थान पर्यावरण शब्द का ही प्रयोग करते हैं। इस अर्थ में प्राणी के चारों तरफ जो कुछ भी भौतिक या अभौतिक वस्तुयें हैं वे उसका पर्यावरण है।

वैदिक मुनियों ने हमारे राष्ट्र की सांस्कृतिक सौन्दर्य–मूलक एवं आर्थिक जीवन धारा में पेड़ पौधो एवं वनो की भूमिका को बेहद सराहा है ऋग्वेद में बारंबार मौसम पर नियंत्रण पाने, भूमि को उपजाऊ बनाने तथा मानव जीवन की एकरसता बढ़ाने में वृक्षों व वनस्पतियों तथा वन्य पशुओं। का महत्व दर्शाया गया है। वैदिक भारत में तथा आदिकालीन संस्कृत साहित्यों में अधिक वृक्ष उगाना एक नारा नहीं अपितु धर्म द्वारा अनुमति प्राप्त जीवन जीने की अति उत्तम पद्धति थी, जिसकी उपयोगिता आज के जीवन में प्रासंगिक है। वेदों के अनुसार–''जो व्यक्ति अपने जीवन काल में मात्र एक वृक्ष उगाता है, वह मृत्यु के पश्चात सीधा स्वर्ग में जाता है।''

भानमती स्मारक पी0जी0 कालेज अकबरपुर, अम्बेडकरनगर

'बृहदारण्यकोपनिषद्' में वृक्ष को मनुष्य के तुल्य माना गया है। वहीं कालिदास की कृतियों में वृक्षों को सगे भाई तथा लताओं को सगी बहन तुल्य समझा जाता है। यथा–'शकुन्तला–न केवलं तातनियोग एव अस्ति में सोदर।'

प्रकृति के प्रति आदरभाव भारतीय कला, संस्कृति एवं साहित्य में प्रचुरता से उपलब्ध होता है। प्राचीन भारतीय साहित्य प्रकृति और वन्य जीवन से सम्बंधित कहानियों का विशाल भण्डार है, जिससे ज्ञान एवं नीति दोनों ही प्राप्त होते है। चाहे सीता हो या पार्वती या फिर वन कन्या शकुन्तला। इनका प्रकृति प्रेम संस्कृत साहित्य में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है।

अरण्यबीजाञ्जलिदानलालितास्तथा च तस्या हरिणा विशश्वसुः।

यथा तदीयैर्नयनैः कुतुहलात् पुरः सखीनाममिमीतलोचने।।[1]

भारत के लिए वृक्ष–पूजा नई वस्तु नही है। वृक्षारोपण की रीति कम से कम पन्द्रह सौ वर्ष पुरानी तो है ही, क्योंकि मत्स्य पुराण के एक अध्याय में इस समारोह के सन्दर्भ में पूर्ण विधि–विधान बताया गया है।[2] वराह पुराण में वन महोत्सव का वृक्षारोपण समारोह का वर्णन है, जिसमें आधुनिक युग इसकी प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

अश्वत्थमेकं पिचुमिन्दमेकं न्यग्रोधमेकं दशपुष्पजातिः।

द्वे द्वे तथा दाडिममातुलुंगे पंचाम्ररोपी नरकं न याति।।

अर्थात जो कोई कि एक पीपल, एक नीम, एक बड़ दस फूलों के पौध या लताएं, दो अनार, दो नारंगी और पाँच आम के वृक्ष लगाता है वह नरक में नहीं जाता है।[3]

भगवान कहते है कि सृष्टि के समय में मैं (ईश्वर) समस्त पेड़ पौधों में विद्यमान रहा हूँ (आदौसर्ववृक्षमयं पूर्वविश्वमजायत)।[4] वृक्षदेवत्व के साथ उसे विनष्ट करना या दूषित करना पाप माना जाता था। पद्मपुराण (पद्मपुराण) के अनुसार वृक्षों को काटना नरक में दण्डनीय अपराध है।[5] स्कन्दपुराण में वृक्षों की एक लम्बी सूची दी गई है। इन वृक्षों को काटना निन्दनीय माना गया है।[6]

हमने वनस्पतियों को जीवनोपयोगी और वृक्षो को पूज्य माना–फलतः पीपल, तुलसी, नीम, आम्र आदि की हमने पूजा की। उनको काटना पाप माना, उनकी रक्षा की। वे हमारे जीवन तथा ज्ञान के आश्रय बने। यथा भगवान् कृष्ण कहते हैं– समस्त वृक्षों में मैं अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष हूँ।[7]

पद्मपुराण में (सृष्टि खण्ड) यह वर्णन आया है कि जिस घर में तुलसी का पौधा रहता है उनके निवासी भाग्यशाली होते है।[8] ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृति खण्ड) में कहा गया है कि 'जिस स्थान पर तुलसी का पौधा लगाया जाता है । वह स्थान पवित्र एवं प्रायः देवताओं का निवास स्थल होता है।'[9] स्कन्द पुराण में कहा गया है कि–''जिस गृह में प्रतिदिन तुलसी की पूजा की जाती है उसमें यमदूत प्रवेश नही करते।''[10]

अपनी संहिता में मनु ने वृक्षों को काटने के लिए अनेक दण्ड निर्धारित किये हैं। और उसे अधर्म का कार्य कहा गया है। चरकसंहिता में वनों के विनाश करने को मनुष्य एवं राष्ट्र के कल्याण के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक माना गया है।

विगुणेश्वपितु खलु तेशु.....।[11]

अर्थात जंगलों का विनाश राष्ट्रों के लिए तथा मनुष्य जाति के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक है। समाज के कल्याण से वनस्पति का सीधा सम्बन्ध है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषण के कारण और वनस्पति के विनाश के कारण राष्ट्र को बर्बाद करने वाली अनेक बीमारियाँ पैदा हो जाती है। तब चिकित्सकीय गुणयुक्त वनस्पति ही प्रकृति की अभिवृद्धि करके मानवीय रोगों को ठीक कर सकती है।

हिन्दुओं की वृक्ष पूजा का केवल धार्मिक और पौराणिक महत्व व आधार ही नहीं है बल्कि वह पेड़ पौधो की उपयोगिता के विभिन्न तथ्यों पर भी आधारित है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकरण और शहरीकरण में अभिवृद्धि तथा उससे उत्पन्न पर्यावरणीय संकट ने उस वृद्धिमत्ता के प्रति सम्मान को अधिक बढ़ा दिया है। जिसने हमारी वृक्ष सम्पदा के संरक्षण पर ध्यान देकर वृक्षों को देश में समाहत बनाया धीरे–धीरे देश का वन्य क्षेत्र घटता गया है और उद्यान लगाना अब एक पुण्य का कार्य नहीं रह गया है। इस बात ने पर्यावरण को गंभीरता से प्रभावित किया है।

श्रीमद्भागवतगीता में वृक्षों के महत्व का वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि–

पश्यतैतान् महाभागान् परार्थैकान्तजीवितान्।

वातवर्शातपहिमान् सहन्ते वारयन्ति नः।

अर्थात देखो, कितने बड़े भाग हैं इन वृक्षों के जो केवल इस लिए जीते हैं कि दूसरों का भला हो। कितनी महानता है उनकी कि वे आँधी, वर्षा और तूफान तथा धूप की प्रखरता सहते हुए हमारी रक्षा करते हैं। श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि–

पत्र–पुष्प फल–छाया–मूल–वल्कल–दारुभिः।

गन्ध–निर्यास–भस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते।।

अर्थात ''वृक्ष अपने सभी अवयवों–पत्तों से, फूलों से, जड़ों से, छाया से,छाल से लकड़ियों से, गन्ध से, गोद से, राख से, कोयले से और टहनियों से सबकी कामना पूरा करते है।''

श्रीमद्भागवत के अनुसार वृक्षों ने किसी भी याचक को कभी निराश नहीं किया है–

अहो एशां वरं जन्य सर्व प्राश्युपजीवनम्।

सुजनस्येत धन्या महीरुहा येम्यो निराशाः यान्ति नार्थिनः।।

अर्थात समस्त प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाले इन वृक्षों का जन्म कितना उत्तम है। सज्जनों जैसे कितने धन्य है वे जिनके पास से काई याचक निराश नहीं लौटता है। विक्रमचरित में वृक्षों को सत्पुरूषों के समान माना गया है–

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयममातपे।

फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुष। इव।।

उपरोक्त साहित्यिक कथनों का अवलोकन कर वर्तमान समय में पर्यावरणीय उथल–पुथल की स्थिति से कितनी सरलता से छुटकारा पाया जा सकता है। जो कि आज एक विषधर भुजंग की भाँति हमें तथा इस संसार को अपने घेरे में इतनी जकड़ लिया है। यहाँ कही रोशनी दिखाई देती है तो यह संस्कृति और साहित्य का अवलोकन व उस पर अमल ही है। क्योंकि हमने वृक्षों वनस्पतियों को देवता या उनमें देवता का निवास माना–

न्यग्रोधं समुपागम्य वैदेही चाभ्यवन्दत.....कृपर्यगच्छन्मनस्विनी।[12]

अर्थात 'हे शक्ति शाली वृक्ष! मैं तूझे प्रणाम करती हूँ। मेरे पति का प्रण पूरा कराने की दया करो, जिससे मैं अपनी पूजनीय सास कौशल्या और सुमित्रा के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ।

विज्ञान के ज्ञानाहंकार ने प्रकृति के रहस्योद्घाटन के गर्व में प्राचीन मान्यताओं को नष्ट कर दिया और मानव स्वाभाविक जीवन की जगह बनावटी जीवन पद्धति पर निर्भर हो गया। जिससे प्रकृति विकृति का रूप परिलक्षित हुआ और मानवजीवन ही नहीं, सम्पूर्ण प्राणियों का जीवन दूभर हो गया और आज यह दिन देखना पड़ रहा है।

इस प्रकार आधुनिक सभ्यता की चकाचौंध ने हमारी पूज्य मानसिकता पर अनवरत आघात किया और हमने अपने स्वार्थ में उनका विनाश करना प्रारम्भ किया, परिणाम विश्व के सामने है। इसीलिए हमारे मनीषियों ने इस मानसी प्रवृत्ति को रोकने का उपदेश किया। इतना ही नहीं इसके लिए मूलभूत सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया गया कि आप दूसरों के प्रति ऐसा कोई कार्य न करें जिसका अपने प्रति किया जाना आपको भी बुरा लगें–

''आत्मनः प्रतिकूलानि परेशां न समाचरेत्''

परिवर्तन और विकास मानव की मूल प्रवृत्ति है। सदैव उसने असभ्यता के कैनवास पर सभ्यता की लकीरें खीचने का कार्य किया है। साथ ही उसने आचरण, शिक्षा, और शिक्षा एवं ज्ञान के माध्यम से अपने को परिमार्जित किया है। इसी क्रम में आज हम अपने को आधुनिक भी कहने लगे है। किन्तु आधुनिक होने का अभिप्राय नैतिक मूल्यों को तिलांजलि देना नहीं है। अतएव नैतिकता के प्रहरी आचरण को ठीक रखकर ही हम अपनी विकासवादी प्रवृत्ति को ठोस स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। अतः अच्छे आचरण का स्वामी सदैव समाज के लिए एक आदर्श होता है। वह अपने आत्मबल से ही जीवन की अनेक समस्याओं को सुलझा देता है।

''धन के नष्ट होने से आपका कुछ भी नहीं खोता,
स्वास्थ्य खोने से आपने कुछ खो दिया,
चरित्र को गवाँ कर आपने सब कुछ खो दिया।''

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. कुमारसम्भवम्, 5 / 15
2. मत्स्य पुराण, 59 / 159

3. वराह पुराण, 172 / 39
4. स्कन्द पुराण, 15 / 21
5. पद्म पुराण, 56 / 40 / 41
6. स्कन्द पुराण, 20 / 83
7. गीता,10 / 26
8. पद्म पुराण (सृष्टि खण्ड), 59 / 7
9. ब्रह्मवैवर्त पुराण (प्रकृतिखण्ड), 21
10. स्कन्द पुराण, 21 / 66
11. चरक संहिता विमानस्थान, 3 / 11
12. वा0 रा0 अयो0 काण्ड, 53 / 24 / 2